॥नवम उल्लास॥

अलङ्कार का स्वरूप-

'अलङ्करोति इति अलङ्कारः' यह अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति है इसके अनुसार शरीर को विभूषित करनेवाले अर्थ या तत्त्वका नाम 'अलङ्कार' है। जिस प्रकार कटक, कुण्डल आदि आभूषण शरीर को विभूषित करते हैं, इसलिए अलङ्कार कहलाते हैं उसी प्रकार काव्यमें अनुप्रास, उपमा आदि काव्य के शरीरभूत शब्द और अर्थ को अलङ्कृत करते हैं इसलिए अलङ्कार कहलाते हैं। अलङ्कार अलङ्कार्य का केवल उत्कर्षाधायक तत्त्व होता है, स्वरूपाधायक या जीवनाधायक तत्त्व नहीं। जो स्त्री या पुरुष अलङ्कारविहीन हैं, वह भी मनुष्य हैं। पर जो अलङ्कारयुक्त हैं, वह अधिक उत्कृष्ट समझे जाते हैं। इसी प्रकार काव्य में अलङ्कारों की स्थिति अपरिहार्य नहीं है। वे यदि हैं, तो काव्यके उत्कर्षाधायक होंगे, यदि नहीं हैं, तो भी काव्य की कोई हानि नहीं है। इसलिए अलङ्कारों को काव्यका अस्थिर धर्म माना गया है। यही गुण तथा अलङ्कारों का भेदक तत्त्व है। गुण काव्य के स्थिर धर्म हैं, काव्य में गुणों की स्थिति अपरिहार्य है। परन्तु अलङ्कार स्थिर या अपरिहार्य धर्म नहीं हैं, केवल उत्कर्षाधायक हैं। उनके बिना भी काव्य में काम चल सकता है। इसलिए काव्यके लक्षणमें मम्मटने **'अनलङ्कृती पुनः क्वापि'** लिखकर अलङ्कार रहित को भी काव्य माना है। इसी दृष्टि से उन्होंने अष्टम उल्लास में अलङ्कारोंका लक्षण करते हुए लिखा है-

अलङ्कारका लक्षण-

"उपकुर्वन्ति तं सन्तं येङ्गद्वारेण जातुचित्
हारादिवदलङ्कारास्तेनुप्रासोपमादयः"।।

अर्थात् अलङ्कार 'जातुचित्' कभी-कभी ही उस रस को अलङ्कृत करते हैं, सदा नहीं। इसलिए ये काव्य के अस्थिर धर्म हैं। 'साहित्यदर्पण में भी अलङ्कार का लक्षण इसी आशय से निम्नलिखित प्रकार किया गया है-

शब्दार्थथोरस्थिराः ये धर्माश्शोभातिशायिनः ।
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलङ्कारास्तेऽङ्गदादिवत्।।(सा.द.10.1)

किन्तु अलङ्कारोंको काव्य के अस्थिर धर्म मानने का सिद्धान्त सर्वमान्य नहीं है। यह केवल ध्वनिवादी सम्प्रदाय का दृष्टिकोण है अलङ्कारसम्प्रदाय अलङ्कारों को काव्य का अपरिहार्य स्थिर तत्त्व मानता है उसके मत में अलङ्काररहित काव्य की कल्पना, उष्णतारहित अग्नि की कल्पना के समान ही उपहास योग्य है। इसी भाव को व्यक्त करते हुए जयदेव ने अपने चन्द्रालोक में लिखा है-

अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती ।
असौ न मन्यते कस्मात् अनुष्णमनलं कृती ॥

जो आदमी (मम्मट) अलङ्कारविहीन शब्द और अर्थ को काव्य मानता है, वह उष्णताविहीन अग्निको क्यों नहीं मानता है ?

अलङ्कार

शब्दालङ्कार 6 | अर्थालङ्कार 61

॥शब्दालङ्कार॥

(1) अनुप्रास (2) यमक

(3) वक्रोक्ति (4) श्लेष

(5) चित्र (6) पुनरुक्तवदाभास।

अलङ्कारों में धर्म- शब्दपरिवृत्ति असहत्व धर्म।

(1) वक्रोक्ति -

लक्षण- **"यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते।**
श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा"।

जो वक्ता द्वारा अन्य प्रकार से अन्य अर्थ में कहा हुआ वाक्य दूसरे अर्थात् श्रोता के द्वारा श्लेष अथवा काकु के कारण वक्ता के अभिप्राय से भिन्न अर्थ में लगा लिया जाता है वह वक्रोक्ति नामक अलंकार होता है, और वह श्लेष और काकु के भेद से दो प्रकार का होता है ।

दो प्रकार- (1) श्लेष (2) काकु

वक्रोक्ति

श्लेष | काकु

पदभङ्ग | अभङ्ग

पदभङ्ग-

नारीणामनुकूलमाचरसिचेज्ञानासिकश्चेतनो....।

यहाँ पर नारीणां, वामानां और अबलानाम् इत्यादि पद श्लिश्टार्थ हैं अत: वक्ता द्वारा प्रयुक्त उपरोक्त पदों के अर्थ को श्रोता **'न अरीणां' तथा 'न बलं येषां ते अबला:'** इस प्रकार श्रोता द्वारा वक्ता के अभिप्राय को भिन्नार्थ में ग्रहण करता है ।

अभङ्ग- **अहो केनेदृशी बुद्धिर्दारुणा तव निर्मिता**
त्रिगुणा श्रूयते बुद्धिर्न तु दारुमयी क्वचित्।।

यहाँ पर श्रोता द्वारा वक्ता द्वारा कठोर अर्थ में प्रयुक्त दारुणा पद का वक्ता के अभिप्राय से भिन्न काष्ठेन वह अर्थ लगा लिया गया और इस पद का भङ्ग भी नहीं हुआ अत: **'अभङ्गश्लेष'** है ।

काकु -

गुरुजनपरतन्त्रतया दूरतरं देशमुद्यतो गन्तुम्।
अलिकुलकोकिललालितेनैष्यति सखिसुरभिसमयेऽसौ॥

(2) अनुप्रास -

लक्षण- **"वर्णसाम्यमनुप्रासः छेकवृत्तिगतो द्विधा"।**

वर्णों की समानता अर्थात् आवृत्ति का नाम ही अनुप्रास है ।

वृत्तिः- 'नियतवर्णगतो रसविषयो व्यापारः वृत्तिः'।

अनुप्रास(वर्णानुप्रास)

छेकानुप्रास | वृत्त्यनुप्रास

छेकानुप्रास - 'सोऽनेकस्य सुकृत्पूर्वः'। छेको विदग्धः ।

अनेक व्यञ्जनों का सकृत अर्थात् एक बार सादृश्य होना छेकानुप्राम कहलाता है । छेक विदग्ध (चतुर) को कहते हैं ।

उदाहरण- "ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपण्डुताम्"।।

वृत्यनुप्रास - 'एकस्याप्यसकृत्परः'। एक वर्ण का अथवा अनेक व्यञ्जनों का एक बार या बहुत बार का सादृश्य अर्थात् आवृत्ति होना वृत्यनुप्रास कहलाता है । इसमें गुण, वृत्ति और रीति आदि का समन्वय होता है।

वृत्ति/मार्ग/रीति/सङ्घटना-

"माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैरुपनागरिगोच्यते।
ओजः प्रकाशकैस्तैस्तु परुषा कोमला परैः"॥

गुण -	माधुर्य	ओज	प्रसाद
उद्भट्ट-वृत्ति -	उपनागरिका	परुषा	कोमला(ग्राम्या)
वामन-रीति -	वैदर्भी	गौड़ी	पाञ्चाली
कुन्तक,दण्डी-मार्ग -	सुकुमारमार्ग	विचित्रमार्ग	मध्यममार्ग

आनन्दवर्धनाचार्य-(सङ्घटना)।

उदाहरण-

अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः।
अलमलमालि !मृणालैरिति वदति दिवानिशां बाला।।

अन्वय (उद्देश्य-विधेयभाव) मात्र से - **लाटानुप्रास।**

लाटानुप्रास - (शब्दगत अनुप्रास)

"शाब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः"।

आवृत्त पद में 'तात्पर्य' मात्र से भेद होने पर शब्दानुप्रास लाटानुप्रास कहलाता है ।

पाँच भेद -

उदाहरण- यस्य च सविधे दयिता दवहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।
यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।।

लाटानुप्रास समास-(एकपद-लाटानुप्रास)-

पदानां सः पदस्यापि वृत्तावन्यत्र तत्र वा।

नाम्नः स वृत्त्यवृत्त्योश्च तदेवं पञ्चधा मतः।।

सितकरकररुचितविभा विभाकराकार धरणिधर कीर्तिः।

पौरुषकमला कमला सापि तवैवास्ति नान्यस्य ।।

उदाहरण- वदनं वरवर्णिन्यास्तस्याः सत्यं सुधाकरः

सुधाकरः क्व नु पुनः कलङ्कविकलो भवेत्।।

(3) यमक -

लक्षण- **"अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः।**

यमकं पादतद्भागवृत्ति तद्यात्यनेकताम्"॥

अर्थ होने पर भिन्नार्थक वर्णों की उसी क्रम से पुनः पुनरावृत्ति यमक नामक शब्दालंकार कहलाता है । यमक के प्रमुख (8) प्रकार हैं तथा सम्पूर्ण (40) भेद हैं ।

(1) सन्दंशयमक (2) युग्मयमक

(3) महायमक (4)पदभागावृत्ति,सन्दष्टकयमक,

(5) आद्यन्तिक यमक (6)आद्यन्तिककान्तादिकसमुच्चय

(7) पादगताद्यन्तिकान्तादिकसमुच्चय (8) अनियतस्थानावृत्ति।

(4) श्लेष -

"वाच्यभेदेन भिन्नायद् युगपद्भाषणस्पृशः।

श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोसावक्षरादिभिरष्टधा"।।

अर्थ का भेद होने से भिन्न-भिन्न अर्थों के बोधक समानाकार भिन्न-भिन्न शब्द समानाकार होने से एकसाथ उच्चारण के कारण जब परस्पर मिलकर एक हो जाते हैं, तब वह श्लेष रूप शब्दालंकार होता है और वह अक्षर आदि के भेद से आठ प्रकार का होता है ।

श्लेष शब्दालंकार के 8 भेद -

(1) वर्ण (2) पद

(3) लिङ्ग (4) भाषा

(5) प्रकृति (6) प्रत्यय

(7) विभक्ति (8) वचन।

उदाहरण-

1. वर्णश्लेष-

अलङ्कारः शङ्काकरनकपालं परिजनो। (शिव का वर्णन)

2. पदश्लेष -

पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव!। (याचक-राजा वर्णन)

3. लिङ्ग/वचन-

भक्तिप्रह्वविलोकनप्रणयिनी नीलोत्पलस्पर्धिनी।(भक्ति वर्णन)

4. भाषाश्लेष -

महदेसुर सन्धम्मे तमवसमासङ्गमागमाहरणे। (गौरी स्तुति)

5. प्रकृतिश्लेष-

अयं सर्वाणि शास्त्राणि हृदि ज्ञेषु च वक्ष्यति।(राजा-पुत्र वर्णन)

6. प्रत्ययश्लेष-

रजनिरमणमौलेः पादपप्रावलोक-। (शिव उपासना)

7. विभक्तिश्लेष-

सर्वस्वं हर सर्वस्य त्वं भवच्छेदतत्परः। (शिव भक्त डाकू का अपने पुत्र को उपदेश)

8. वचनश्लेष-

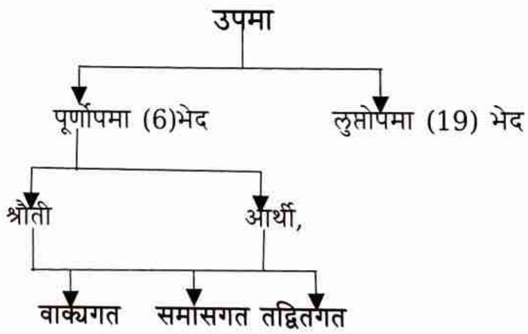
॥अर्थालङ्कार॥

(1) उपमा-

लक्षण- **"साधर्म्युपमा भेदे पूर्णा लुप्ता च साऽग्रिमा**

श्रौत्यार्थी च भवेद्वाक्ये समासे तद्धिते तथा"।

'उपमान' तथा 'उपमेय' का भेद होने पर उनके साधर्म्य का वर्णन उपमा कहलाता है । वह उपमा 'पूर्णोपमा' तथा 'लुप्तोपमा' इन दो प्रकार की होती है । उनमें से प्रथम पूर्णोपमा 'श्रौती' तथा 'आर्थी' दो प्रकार की होती है, तथा फ़िर उन दोनों में से प्रत्येक 'वाक्यगत, समासगत तथा तद्धितगत' तीन प्रकार की कुल छह प्रकार की उपमा होती है । **उपमान, उपमेय, साधारण धर्म, उपमावाचक इवादि** शब्द इन चारों के ग्रहण होने पर **पूर्णोपमा** एक या दो का लोप होने पर **लुप्तोपमा** होती है।



दोनों में प्रत्येक **वाक्यगत, समासगत, तद्धितगत** तीन प्रकार से (छः) भेद होते हैं। पूर्णोपमा और लुप्तोपमा को मिलाकर उपमा के सम्पूर्ण (25) भेद होते हैं ।

उदाहरण -

वाक्यगा श्रौती पूर्णोऽपमा-

स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति

प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा।।

वाक्यगा आर्थी पूर्णोपमा-

चकितहरिणलोललोचनायाः क्रुधितरुणारुणतारहारिकान्ति।

सरसिजमिदमाननं च तस्याः सममिति चेतसि समदं विधत्ते।।

समासगान श्रौती पूर्णोपमा-

अत्यायतैर्नियमकारिभिरुद्धतानां दिव्यैः प्रभाभिरनपापमयैरुपायैः।

शोभिर्भुजैरिव चतुर्भिरदः सदा यो लक्ष्मी विलासभवनैर्भुवनं बभार।

समासगा आर्थी पूर्णोपमा-

अवितथमनोरथपथनेषु प्रगुणगरिमगीतश्रीः।
सुरतरुसदृशः स भवानभिलषणीयः क्षितीश्वर न कस्य।।

तद्धितगत श्रौती तथा आर्थी पूर्णोपमा-

गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत्।
दुरालोकः स समरे निदाघाम्बररत्नवत्।।

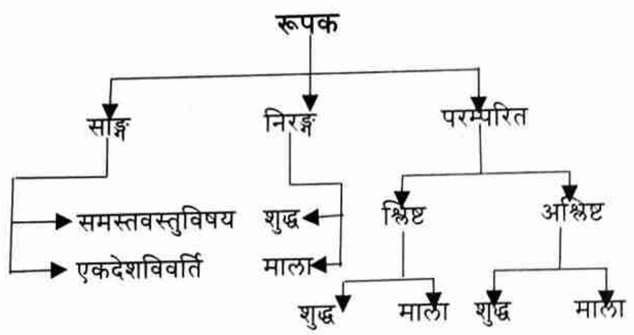
(2) रूपक-

लक्षण- **"तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः"।।**

उपमान और उपमेय का जो अभेद वर्णन है वह रूपक अलङ्कार कहलाता है।

उदाहरण- ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी-
न्यन्तर्द्धानव्यसनरसिका रात्रिकापालिकीयम्।।
द्वीपाद् द्वीपं भ्रमति दधती चन्द्रमुद्राकपाले।
न्यस्तं सिद्धाञ्जनपरिमलं लाञ्छनस्यच्छलेन।।

'यहाँ पर रात्रि के ऊपर कपालिकी का आरोप किया गय है'।



(3) उत्प्रेक्षा-

लक्षण- **"सम्भवनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्"॥**

प्रकृत (अर्थात् वर्ण्य उपमेय) की सम (अर्थात् उपमान) के साथ सम्भावना (अर्थात् उत्कैटकोटिक सन्देह) उत्प्रेक्षा कहलाती है।

उदाहरण-

(1) उन्मेषं यो मम न सहते जातिवैरी निशाया
मिन्दोरिन्दीवरदलदृशा तस्य सौन्दर्य दर्पः।
नीतः शान्तिं प्रसभमनया वक्रकान्त्येति हर्षा।
लग्ना मन्ये ललिततनु ते पादयोः पद्मलक्ष्मीः॥

(2) लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफ़लतां गता॥

(4) समासोक्ति -

लक्षण- **"परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः"।**

श्लेषयुक्त भेदक अर्थात् विशेषणों के द्वारा पर अर्थात् अप्रकृत के व्यवहार का कथन **'समासेन संक्षेपेण उक्तिः'** (दो अर्थों का संक्षेप से कथन होने के कारण) समासोक्ति अलङ्कार कहलाता है।

उदाहरण- लब्ध्वा तव बाहुस्पर्शं यस्याः स कोऽप्युल्लासः।
जयलक्ष्मीस्तव विरहे न खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा।।

(5) अपह्नुति -

लक्षण- **"प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा त्वपह्नुतिः"।।**

प्रकृत अर्थात् उपमेय का निषेध करके जो अन्य अर्थात् उपमान की सिद्धि की जाती है वह अपह्नुति अलंकार कहलाता है। अपह्नुति के दो भेद होते हैं - 1. **शाब्दी अपह्नुति, 2. आर्थी आह्नुति।**

उदाहरण-

शाब्दी अपह्नुति- अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये!
कलङ्को नैवायं विलसति शशाङ्कस्य वपुषि।
अमुष्येयं मन्ये विगलदमृतस्यन्दशिशिरे
रतिश्रान्ता शेते रजनिरमणी गाढमुरसि॥

आर्थी आह्नुति- वत सखि! कियदेतत् पश्य वर स्मरस्य।
प्रियविरहकृशेऽस्मिन् रागिलोके तथा हि
उपवनसहकारोद्भासिभृङ्गच्छलेन
प्रतिविशिखमनेनोट्टङ्कितं कालकूटम्॥

(6) निदर्शना-

लक्षण- **"अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः"।।**

जहाँ वस्तु का असम्भव या अनुपद्यमान सम्बन्ध (प्रकृत की अपकृत के साथ) उपमा का परिकल्पक उपमा में पर्यवसित होता है वह निदर्शना नामक अलङ्कार होता है। निदर्शना के दो भेद हैं -1. **वाक्यार्थनिदर्शना,** 2. **पदार्थनिदर्शना।**

उदाहरण-

1. **वाक्यार्थनिदर्शना-** क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।।

2. **पदार्थनिर्दशना-**
उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्ञावहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि घण्टाद्वय परिवारितवारणेन्द्रलीलाम्।।

(7) अर्थातरन्यास-

लक्षण- **"सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।**
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा"।।

सामान्य अथवा विशेष का उससे भिन्न अर्थात् सामान्य का विशेष के द्वारा अथवा विशेष का सामान्य के द्वारा जो समर्थन किया जाता है वह अर्थातरन्यास अलङ्कार कहलाता है। अर्थातरन्यास अलङ्कार के दो प्रकार हैं- **(1) साधर्म्य (2) वैधर्म्य।** साधर्म्य और वैधर्म्य के विशेष और सामान्य होने से इसके चार भेद होते हैं।

उदाहरण-

साधर्म्य विशेष-

निजदोषावृत्तमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम्।

पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रां शङ्खमपि पीतम्।।

साधर्म्य सामान्य- सुसितवसनालङ्कारायां कदाचन कौमुदी...।

वैधर्म्य विशेष- गुणानामेव दौरात्म्याद् धुरि धुर्यो नियुज्यते।
असञ्जातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गलिः।।

वैधर्म्य सामान्य-
अहो हि मे वह्वपराद्धमायुषा यदप्रियं वाच्यमिदं मयेदृशम्....।

(8) दृष्टान्त -

लक्षण- **"दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्"।।**

इन (उपमान, उपमेय उनके विशेषण और साधारणधर्म आदि) सबका 'बिम्ब-प्रतिबिम्बभाव' होने पर 'दृष्टान्त अलङ्कार' होता है ।

उदाहरण-

त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्।
आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः।।

यहाँ पर नायक तथा चन्द्रमा का, नायिका तथा कुमुदिनि का, मन तथा कुसुम का मनोभव-सन्तप्तव तथा सूर्यसन्तप्तत्व का निर्वाण तथा विकास का बिम्बप्रतिबिम्ब भाव होने से 'दृष्टान्त अलङ्कार' है।

(9) विभावना-

लक्षण- **"क्रियायाः प्रतिषिधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना"।।**

हेतुरूप क्रिया अर्थात् कारण का निषेध अथवा अभाव होने पर भी फ़ल की उत्पत्ति 'विभावना' अलङ्कार कहलाता है ।

उदाहरण- कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त रुजिमलिकुलैरदष्टापि
परिवर्त्तते स्म नलिनीलहरी भिरलोलिताप्यघूर्णत सा।।

(नायिका वर्णन)

(10) विशेषोक्ति-

लक्षण- **"विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः"।**

कारणों के एकत्र होने पर भी कार्य का कथन न करना विशेषोक्ति अलङ्कार कहलाता है । वह तीन प्रकार की होती है- 1. अनुक्तनिमित्ता, 2. उक्तनिमित्ता, 3.अचिन्त्यनिमित्ता ।

उदाहरण-

1. **अनुक्तनिमित्ता-**

निद्रानिवृत्तावुदिते द्युरत्ने सुखीजने द्वारपदं पराप्ते,
श्लथीकृताश्लेषरसे भुजङ्गे चचाल नालिङ्गनतोऽङ्गना सा।।

2. **उक्तनिमित्ता-**

कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने।।
नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे।। **(कामदेव स्तुति)**

3. **अचिन्त्यनिमित्ता-**

स एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः।।
हरताऽपि तनुं तस्य शम्भुना न बलं हृतम्।।

(11) स्वभावोक्ति -

लक्षण- **"स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादिः स्वक्रियारूपवर्णनम्"॥**

बालक आदि की अपनी स्वभाविक क्रिया अथवा रूप अर्थात् वर्ण एवं अवयवसंस्थान का वर्णन 'स्वभावोक्ति' अलङ्कार कहलाता है ।

उदाहरण- पश्चादंघ्री प्रसार्य त्रिकनतिविततं द्राघयित्वाङ्गमुच्चै-
रासज्याभुग्नकण्ठो मुखमुरसि सटां धूलिधूम्रां विधय।
घासग्रासाभिलाषादनवरतचलत्प्रोथतुण्डस्तुरङ्गो
मन्दं शब्दायमानो विलिखति शयनादुत्थितः क्ष्मां खुरेण ।

(12) विरोधाभास-

लक्षण- **"विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः"॥**

वास्तव में विरोध न होने पर भी विरोध की प्रतीति कराने वाले विरुद्धरूप से जो वर्णन करना यह विरोध या विरोधाभास अलङ्कार कहलाता है । विरोधाभास अलङ्कार के दश भेद होते हैं -

10 भेद- **'जातिश्चतुर्भिजात्याद्यैर्विरुद्धा स्याद् गुणस्त्रिभिः
क्रिया द्वाभ्यामपि द्रव्यं द्रव्येणैवेति ते दश' ।।**

जाति का जाति आदि चार (जाति,गुण,क्रिया तथा द्रव्य) के साथ विरोध हो सकता है, गुण का (गुण, क्रिया तथा द्रव्य) तीन के साथ, क्रिया का (क्रिया तथा द्रव्य) दो के साथ और द्रव्य का द्रव्य के साथ विरोध हो सकता है । इस प्रकार ये दस प्रकार के विरोध या विरोधाभास अलङ्कार होते हैं ।

उदाहरण-

जाति का जाति के साथ विरोध-

अभिनवनलिनीकिसलयमृणालवलयादि दवदहनराशिः।
सुभग! कुरङ्ग दृशोऽस्या विधिवशतस्त्व द्वियोगपविपाते॥

(13) सङ्कर-

लक्षण- **"अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु सङ्करः"।**

अपने स्वरूप मात्र में जिनकी विश्रान्ति न हो अर्थात् जो परस्पर निरपेक्ष स्वतन्त्र रूप से अलङ्कार न बनते हों उनका अङ्गाङ्गिभाव होने पर सङ्कर अलङ्कार होता है ।

उदाहरण- आत्ते सीमन्तरत्ने मरकतिनि हृते हेमताटङ्कपत्रे
लुप्तायां मेखलायां झटिति मणितुलाकोटि युग्मे गृहीते।।

(14) संसृष्टि -

लक्षण- **"सेष्टा संसृष्टिरतेषां भेदेन यदिह स्थितिः"।**

इन 'एतेषां' पद में बहुवचन अविवक्षित है । इसलिए दो या अधिक अलङ्कारों की यहाँ काव्य या वाक्य में भेद से परस्पर निरपेक्ष रूप से जो स्थिति है वह संसृष्टि नामक अलङ्कार कहलाता है। संसृष्टि अलङ्कार के तीन भेद होते हैं ।

उदाहरण-

1. **शब्दालङ्कार-** वदनसौरभलोभपरिभ्रमदभ्रमरसम्भ्रमसम्भृतशोभया
चलितया विदधे कलमेखलाकलकलोऽलकलोलदृशाऽन्यया ।

2. **अर्थालङ्कारसंसृष्टि-** लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।।

3. **शब्दार्थालङ्कार-** स नास्त्यत्र ग्रामे य एनां महमहायमानलावण्याम्।
तरुणानां हृदयलुण्ठाकीं परिष्वक्कमानां निवारयति।।

विभिन्न आचार्यों के अनुसार अलंकार के भेद -

मम्मट- 67,
कुन्तक- 20,
भोजराज -24,
चन्द्रालोक-100,
भामह-38,
विश्वनाथ/रुय्यक- 78,
भरत- 4,
अग्निपुराण-23,
अप्पयदीक्षित -120,
दण्डी-37